DR. RANJEET KUMAR
Deptt. Of History
H. D. Jain College Ara
M.A , sem.- 2, CC-6, unit-1

पेरिस शांति सम्मेलन और शांति संधियाँ

1. पेरिस शांति सम्मेलन: पृष्ठभूमि और उद्देश्य

1.1 प्रथम विश्व युद्ध के समापन के बाद की स्थिति

1918 में जब प्रथम विश्व युद्ध खत्म हुआ, तब यूरोप और दुनिया भर में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भारी उथल-पुथल चल रही थी। युद्ध में लाखों लोग मारे गए थे, अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई थी, और पुराने साम्राज्य ढह रहे थे। युद्ध के अंतिम चरण में 1918 के अंत तक दक्षिणी यूरोप और पश्चिमी मोर्चे पर लड़ाइयां समाप्त हो गई थीं। इसके बाद दुनिया के विजयी राष्ट्रों ने मिलकर तय किया कि युद्ध के बाद शांति स्थापित करने और भविष्य के संघर्षों को रोकने के लिए एक बड़ा शांति सम्मेलन बुलाया जाए।

1.2 सम्मेलन का बुलावा और आयोजन

पेरिस शांति सम्मेलन (Paris Peace Conference) जनवरी 1919 में फ्रांस की राजधानी पेरिस के पास वर्साय में शुरू हुआ। यह बैठक जनवरी 18, 1919 को औपचारिक रूप से शुरू हुई और औपचारिक रूप से 1920 तक चली। सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य था विश्व युद्ध के बाद दुनिया के शक्तिशाली देशों के बीच भविष्य की शांति की रूपरेखा तैयार करना, दुनिया के कई देशों के नए सीमांकन करना और नए अंतरराष्ट्रीय नियम स्थापित करना।

सम्मेलन में कुल लगभग 32 देश और कई प्रतिनिधि शामिल थे, लेकिन निर्णयों में असल प्रभाव उन बड़े देशों का था जिन्होंने युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाई थी।

2. “बिग फ़ोर” और सम्मेलन का संचालन

पेरिस सम्मेलन में मुख्य निर्णय “बिग फ़ोर” (Big Four) देशों के नेतृत्व में लिए गए। इन देशों के नेता निम्न थे:

- जॉर्जेस क्लेमेंसो – फ्रांस के प्रधानमंत्री
- डेविड लॉयड जॉर्ज – ब्रिटेन के प्रधानमंत्री
- वुडरो विल्सन – संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति
- विटोरियो एमैनुएले ऑरलैंडो – इटली के प्रधानमंत्री

ये चारों नेताओं ने मिलकर सम्मेलन में होने वाले अंतिम निर्णयों की रूपरेखा तैयार की और अधिकांश मुख्य मुद्दों पर सहमति बनाई। अन्य देशों के प्रतिनिधियों की भूमिका प्रमुख निर्णयों में सीमित रही, हालांकि वे उपस्थित थे।

3. सम्मेलन के प्रमुख विषय और मुद्दे

3.1 युद्ध का परिणाम तय करना

सम्मेलन का सबसे बड़ा काम यह तय करना था कि युद्ध के बाद क्यों और कैसे न्याय व्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था बदली जाए। इसने कई चुनौतियों का सामना किया:

• युद्ध में हारे राष्ट्रों के प्रति क्या दंड रहेगा?
• यूरोप और अन्य क्षेत्रों की सीमाओं को कैसे बदला जाए?
• युद्ध के कारणों और जिम्मेदारियों को किस तरह तय किया जाए?
• भविष्य में संघर्षों को रोकने के लिए क्या अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनाई जाए?

इन सवालों के जवाब ढूंढना आसान नहीं था क्योंकि विजेताओं के बीच भी मतभेद थे, खासकर जर्मनी को कितना दंड देना चाहिए और कैसी नई व्यवस्था शांति सुनिश्चित कर सकती है जैसे मुद्दों पर।

3.2 सम्मेलन में रूस और अन्य राष्ट्रों की अनुपस्थिति

रूस, जो पहले युद्ध में एक प्रमुख राष्ट्र था, 1917 में अपनी बोल्शेविक क्रांति के बाद युद्ध से बाहर हो गया और उसे सम्मेलन में आमंत्रित नहीं किया गया। इससे उसके नई अंतरराष्ट्रीय स्थिति की मान्यता और अधिकारों पर विवाद हुआ। उसके अलावा, हारने वाले देशों जैसे जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, तुर्की और बुल्गारिया को वार्ता के दौरान सीधी भागीदारी नहीं दी गई थी।

4. वर्साय की शांति संधि (Treaty of Versailles)

4.1 संधि का महत्व

समारोह का सबसे प्रमुख परिणाम Treaty of Versailles था, जो 28 जून 1919 को वर्साय के हॉल ऑफ़ मिरर्स में जर्मनी और विजयी राष्ट्रों के बीच हस्ताक्षरित हुआ। इस संधि ने औपचारिक रूप से प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य संघर्ष को समाप्त किया।

4.2 जर्मनी के लिए शर्तें

संधि ने कई कठोर शर्तें जर्मनी पर लागू कीं, जिनका असर न सिर्फ तत्कालिक शांति पर पड़ा बल्कि आने वाले वर्षों में भी विश्व राजनीति को प्रभावित किया:

• जर्मनी को युद्ध का पूरा दोष स्वीकार करना पड़ा (Article 231, “War Guilt Clause”)।
• जर्मनी को अपनी बहुत सी भूमि गंवानी पड़ी और उसकी सेनाओं पर कड़े सीमाएँ लगा दी गईं।
• उसके औपनिवेशिक क्षेत्रों और कुछ सामग्री नियंत्रण को नया रूप दिया गया।
• उसे भारी युद्ध मुआवजा (reparations) देना पड़ा, जिसका आर्थिक बोझ वर्षों तक जारी रहा।

ये शर्तें जर्मनी के लिए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से भारी परिणाम लेकर आईं। शुरुआत में इन्हें न्यायपूर्ण माना गया, लेकिन आगे चलकर जर्मनों में भारी असंतोष और राष्ट्रीयतावाद बढ़ा, जिसने बाद में द्वितीय विश्व युद्ध जैसी परिस्थितियों को जन्म दिया।

5. अन्य संधियाँ और समझौते

वर्साय संधि के अलावा सम्मेलन में कई अन्य शांतिसंधियाँ भी तैयार की गईं:

• Treaty of Saint-Germain (ऑस्ट्रिया से) – सितम्बर 1919 में।
• Treaty of Neuilly (बुल्गारिया से) – नवंबर 1919 में।
• Treaty of Trianon (हंगरी से) – जून 1920 में।

• Treaty of Sèvres (ओटोमन तुर्की से) – अगस्त 1920 में (हालंकि यह बाद में काफी संशोधित हुआ)।

इन समझौतों ने युद्ध के बाद यूरोप और मध्य-पूर्व की राजनीतिक और भौगोलिक संरचना को पूरी तरह बदल दिया।

6. लीग ऑफ़ नेशन्स का विचार

6.1 सम्मेलन के दौरान नवाचार

पेरिस सम्मेलन ने League of Nations (राष्ट्र संघ) की स्थापना का प्रस्ताव भी रखा, जो दुनिया के देशों को मिलकर शांति बनाए रखने तथा संघर्षों को सुलझाने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच देना चाहता था।

वुडरो विल्सन (Woodrow Wilson) ने इस संस्था का जोरदार समर्थन किया और इसे भविष्य के युद्धों को रोकने का समाधान माना।

6.2 संगठन का उद्देश्य और महत्व

लीग का लक्ष्य था:

• राष्ट्रीय विवादों को शांति से हल करना
• संयुक्त राष्ट्र जैसे साझा निर्णय-प्रक्रिया का विकास
• सामरिक संघर्षों के बजाय कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय कानून को प्राथमिकता देना

लेकिन सम्मेलन में तैयार रूप से लीग ऑफ़ नेशन्स के लिए समर्थन मिश्रित रहा। अमेरिका का कांग्रेस इससे असहमत रहा, जिससे अमेरिका खुद लीग का हिस्सा नहीं बन पाया।

7. जर्मनी और यूरोप में प्रतिकूल प्रभाव

7.1 आर्थिक और सामाजिक परिणाम

वर्साय संधि के तहत तय किए गए मुआवजे और कड़े नियमों ने जर्मनी में आर्थिक कठिनाइयों को बढ़ा दिया। उच्च reparations और सीमित औद्योगिक क्षमता ने देश को वित्तीय तंगी में डाल दिया, जिससे बेरोजगारी, महंगाई और राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी।

7.2 राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ

इन कठोर नीतियों के कारण जर्मनी में अविश्वास और असंतोष बढ़ा, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीयतावाद और चरमपंथी विचारों को बढ़ावा दिया। इससे कुछ वर्षों बाद द्वितीय विश्व युद्ध जैसा विनाशकारी संघर्ष उभरने में मदद मिली।

8. अमेरिका और वर्साय संधि

8.1 विल्सन और अमेरिकी राजनीति

जब वुडरो विल्सन अमेरिका लौटे, तो वहाँ पहले जनता में संधि और लीग ऑफ़ नेशन्स के प्रति सकारात्मक भावना थी। कई राज्य विधायिका ने समर्थन दिया।

8.2 अमेरिकी सीनेट का विरोध

लेकिन अमेरिकी सीनेट ने संधि के कई प्रावधानों का विरोध किया, खासकर Article 10 जो लीग ऑफ़ नेशन्स की सुरक्षा व्यवस्था से जुड़ा था। विरोधियों ने कहा कि यह अमेरिकी युद्ध-निर्णय अधिकार को कमजोर करेगा।

इस विरोध के कारण आखिरकार अमेरिकी सीनेट ने संधि को मंजूरी नहीं दी, और अमेरिका ने लीग ऑफ़ नेशन्स में भी शामिल नहीं हुआ। बाद में अमेरिका ने Treaty of Berlin (1921) पर अलग संधि की, जिसमें वर्साय संधि के लाभों को अपनाया गया लेकिन लीग का हिस्सा नहीं बना।

9. पेरिस शांति सम्मेलन का लाभ और सीमाएँ

9.1 सम्मेलन का लाभ

• प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्थिरता के लिए एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय मंच बनाया।
• लम्बे समय तक शांति व्यवस्था के लिये लीग ऑफ़ नेशन्स जैसी संस्था का विचार प्रस्तुत किया।
• कई राष्ट्रों के सीमांकन और राजनीतिक स्वरूप को नया रूप दिया।

9.2 सम्मेलन की सीमाएँ

• जर्मनी पर अत्यधिक दंड ने आगे चलकर शांति को खतरे में डाला।
• कुछ महत्वपूर्ण देशों जैसे रूस की अनुपस्थिति से निष्पक्षता पर प्रश्न उठे।
• अमेरिका का लीग में शामिल न होना लीग की प्रभावशीलता को कम कर गया।

10. निष्कर्ष

1919-20 का पेरिस शांति सम्मेलन और Treaty of Versailles 20वीं सदी का एक निर्णायक मोड़ था। इसने प्रथम विश्व युद्ध को औपचारिक रूप से समाप्त किया, नए राजनीतिक मानदंड स्थापित किए, और विश्व राजनीति के नक्शे को बदल दिया। इसके परिणाम और सीमाएँ भविष्य की अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर गहरा प्रभाव डालती रहीं।